देश में नमो नमो-सत्ता में दक्षिणपंथ

-मनोज कुमार झा

लोकसभा चुनावों में मोदी की जीत को बहुत अप्रत्याशित नहीं कहा जा सकता, लेकिन जीत इतनी भारी होगी, इसकी उम्मीद भी प्रेक्षकों को नहीं थी। बहरहाल, मोदी की जीत और प्रधानमंत्री पद पर उनकी ताजपोशी ने उनके विरोधियों को पूरी तरह पस्त कर दिया है और वे अपने शर्मनाक चुनावी हार के पीछे कारणों की खोजबीन में लग गए हैं। इस बीच कतिपय राज्यों में कई राजनीतिक विसंगतियां विस्फोटक रूप ले रही हैं। अब तक केन्द्र की सत्ता को टिकाए रखने में अहम भूमिका निभाने वाले क्षत्रपों के बीच स्वनिषेधी समीकरण उभर रहे हैं, महज सिर्फ अपने वजूद को टिकाए रख पाने के लिए।

दिग्गज समझे जाने वाले क्षत्रपों को वोटरों ने नकार दिया। इनमें से कुछ कांग्रेस के भ्रष्ट एवं हर तरह से नाकारा वंशवादी शासन को टिकाए रखने में मजबूत पाए का काम कर रहे थे, साथ ही प्रधानमंत्री पद पर भी इनकी गिद्ध दृष्टि लगी थी। सपा सुप्रीमो मुलायम सिंह, बसपा सुप्रीमो मायवती और विकास पुरुष-सुशासन बाबू जैसे नामों से पुकारे जाने वाले नीतीश कुमार पर भारी गाज गिरी है। लालू प्रसाद का भविष्य तो उस कांग्रेस से जुड़ा था। जिसे स्वतंत्र भारत के आम चुनावों में अब तक की सबसे करारी शिकस्त मिली है और एक तरह से उसका पत्ता ही साफ़ हो गया है। इस पराजय की जिम्मेवारी आम जनता के सामने कबूल कर सोनिया और राहुल मानो 'अज्ञातवास' पर चले गए हैं। इसके पहले 'मां-बेटे' ने पार्टी अध्यक्ष और उपाध्यक्ष पद से इस्तीफ़े की पेशकश की जिसे स्वामीभक्त कांग्रेसियों ने कतई नहीं माना, हार का ठीकरा मनमोहन सिंह ने स्वयं अपने ऊपर फोड़ लिया। इस तरह, ऐसा लगता है कि मोदी का 'कांग्रेस मुक्त भारत' बनाने का सपना पूरा हो गया है।

इस गहरी पराजय के बाद कांग्रेस का फ़िर से उठ खड़ा हो पाना निकट भविष्य में असंभव-सा प्रतीत होता है, क्योंकि उसके सोनिया-राहुल-प्रियंका वाड्रा तक सिमटे नेतृत्व में पार्टी चलाने की योग्यता रत्ती भर भी नहीं है। अब भारतीय सत्ता की मुख्य संचालक शक्तियां-देशी और बहुदेशी थैलीशाह शायद ही कांग्रेस पर कोई दांव खोलना चाहे। भारत के स्वतंत्रता संग्राम से जुड़ी सबसे प्रमुख राजनीतिक पार्टी कांग्रेस का यह पतन ऐतिहासिक होने के साथ ही देश की राजनीति में एक नये युग का संकेतक भी है।

अब देश में नई राजनीतिक बयार बहनी है। यह तय है कि आने वाले दिनों में भारतीय राजनीति का स्वरूप पूरी तरह बदला हुआ नज़र आएगा। मोदी की जीत भारतीय राजनीति में पहली बार दक्षिणपंथ की निर्णायक जीत है। अब लगता है कि मध्यमार्गी तथाकथित सेक्युलरपंथी राजनीति करने वालों के लिए कोई स्थान नहीं रह जाएगा। मोदी का उभार और 'अहम् ब्रह्मास्मि' जैसा प्रचंड अवतार लोकतंत्र की मूल अवधारणा पर ही प्रहार होने के बावजूद वर्तमान हालात में निर्वैकल्पिक है।

इस सच को स्वीकार करना ही पड़ेगा कि विगत 65 वर्षों के दौरान जनतंत्र इस कदर छीजता चला गया कि आख़िरकार उसमें ज़रा भी असलियत बच ही नहीं गई, बस एक लबादा रह गया था। जो इस बार पूरी तरह उतार फेंका गया।

यह पहली बार हुआ कि चुनाव का बस एक ही मुद्दा था और वह था नरेन्द्र मोदी। इस आम चुनावों के केन्द्र में मोदी के नाम के अलावा और कुछ भी नहीं था। विरोधियों की पराजय उसी वक्त सुनिश्चित हो गई थी जब उनके लिए भी मुद्दा महज मोदी का नाम ही रह गया। मोदी की तथाकथित लहर अथवा सुनामी को आगे बढाने में मोदी विरोधियों की भूमिका भी महत्वपूर्ण मानी जाएगी। पूरे चुनाव प्रचार के दौरान उन्होंने जनहित का कोई मुद्दा कहने भर को भी नहीं उठाया। उन्होंने मोदी को ही मुद्दा बना दिया और इस तरह सारा ध्रुवीकरण ही मोदी के नाम पर हुआ। इसे भगवा ब्रिगेड के प्रचारतंत्र की अपूर्व सफलता के रूप में देखा जा रहा है। उल्लेखनीय है कि इस प्रचार का ठेका एक अमेरिकी कंपनी को दिया गया था। मोदी को राष्ट्रीय राजनीति के केन्द्र में स्थापित करने के लिए देशी-विदेशी पूंजीपतियों ने कितना धन बहाया है, इसका आकलन कर पाना आसान नहीं होगा, पर कहा जा सकता है कि इस मामले में पिछले सारे रिकॉर्ड ध्वस्त हो गए। कांग्रेस समेत तमाम दलों ने मिल कर जितनी रकम फूंकी, उतनी मोदी ने संभवत: अकेले उड़ाई है। अब इसकी वसूली पूंजीपति भारी ब्याज समेत करेंगे। पहली बार किसी नेता को ब्रांड के तौर पर स्थापित किया गया। ऐसी मार्केटिंग की गई जो पहले शायद ही देखी-सुनी गई हो। अधिकांश राजनीतिक प्रेक्षकों का मानना है कि इस चुनाव में सिर्फ और सिर्फ मोदी को स्थापित किया गया, भाजपा पृष्ठभूमि में रही। मोदी के आगे भाजपा के तमाम नेताओं का कद बौना नज़र आने लगा। आडवाणी जैसे नेता छटपटा कर रह गए, पर चली एक नहीं। आख़िरकार रो-धोकर ही सही, मोदी को अपना नेता मानने के सिवा कोई चारा नहीं रहा।

यहां सवाल ये है कि इसके पहले क्या भारतीय राजनीति व्यक्ति केंद्रित नहीं थी। भारतीय राजनीति तो शुरूआत से व्यक्ति केंद्रित ही रही है। नेहरू, इंदिरा, राजीव, सोनिया, राहुल ये वो नाम है जिनके इर्द-गिर्द ही कांग्रेस रही है। इनमें सोनिया और राहुल कोई युग नहीं बना सके। तमाम

यह पहली बार हुआ कि चुनाव का बस एक ही मुद्दा था और वह था नरेन्द्र मोदी। इस आम चुनावों के केन्द्र में मोदी के नाम के अलावा और कुछ भी नहीं था। विरोधियों की पराजय उसी वक्त सुनिश्चित हो गई थी जब उनके लिए भी मुद्दा महज मोदी का नाम ही रह गया। मोदी की तथाकथित लहर अथवा सुनामी को आगे बढाने में मोदी विरोधियों की भूमिका भी महत्वपूर्ण मानी जाएगी। पूरे चुनाव प्रचार के दौरान उन्होंने जनहित का कोई मुद्दा कहने भर को भी नहीं उठाया। उन्होंने मोदी को ही मुद्दा बना दिया और इस तरह सारा ध्रुवीकरण ही मोदी के नाम पर हुआ। इसे भगवा ब्रिगेड के प्रचारतंत्र की अपूर्व सफलता के रूप में देखा जा रहा है। उल्लेखनीय है कि इस प्रचार का ठेका एक अमेरिकी कंपनी को दिया गया था। मोदी को राष्ट्रीय राजनीति के केन्द्र में स्थापित करने के लिए देशी-विदेशी पूंजीपतियों ने कितना धन बहाया है, इसका आकलन कर पाना आसान नहीं होगो।

क्षेत्रीय दलों के नेतृत्व पर व्यक्ति ही हावी हैं। ये क्षत्रप कहे जाते हैं। मुलायम से लेकर ममता तक व्यक्तिवादी राजनीति के ही उदाहरण हैं। दक्षिण में जयललिता, करूणानिधि इसी के उदाहरण माने जाएंगे। बीजू जनता दल पटनायक के सिवा कुछ भी नहीं। शिव सेना जैसा आतंककारी संगठन ठाकरे परिवार की पैदाइश है। यहां तक कि वामपंथी दलों में भी व्यक्ति ही हावी रहे, उनके आगे संगठन गौण हो गया। सबसे लंबे समय तक पश्चिम बंगाल पर शासन करने वाली मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी में हाई कमांड भले ही पोलित ब्यूरो रहा हो, पर उसका चेहरा अंत-अंत तक ज्योति बसु ही रहे। इसलिए कहा जा सकता है कि भारतीय राजनीति में दल नहीं, उनके नेता के रूप में कोई न कोई व्यक्ति ही प्रधान रहा है, जिसे सर्वेसर्वा की हैसियत हासिल रही है। पर मोदी का उभार अवश्य एक नई परिघटना है। इसने व्यक्ति को इस रूप में स्थापित किया है, जैसे शायद स्वयं भगवान स्थापित हैं। ईश्वर के आगे सिर झुकाना ही पड़ता है। सिर्फ़ नास्तिक ऐसा नहीं करते हैं। अब भाजपा का मतलब मोदी और जो इसे नकारने का दुस्साहस करेगा, उसके लिए भाजपा में कोई स्थान नहीं रह पाएगा। यह साबित भी हो चुका है।

महत्त्वपूर्ण बात यह है कि अपनी जीत को मोदी भारत की जीत के रूप में स्थापित करने की कोशिश कर रहे हैं। कहीं वह पार्टी का पर्याय होने के साथ-साथ, यानी पार्टी का चेहरा होने के साथ-साथ देश का चेहरा होने की कोशिश तो नहीं कर रहे? जाहिर है, ऐसी कोशिश कभी कामयाब नहीं हो सकती। विजय के मद में चूर मोदी को इंदिरा गांधी के हश्र को नहीं भूलना चाहिए, जिन्हें उनके चमचों ने इंडिया घोषित करने का हास्यास्पद काम किया था।

ऐसे भी जिस मोदी लहर या सुनामी की बात की जा रही है, वह पूरे देश में नहीं आई। स्वयं मोदी और संघ को इस पर विचार करना चाहिए। यह बात अलग है कि जो सांप्रदायिकता के फलने फूलने के मुख्य केंद्र रहे हैं, वहीं मोदी सुनामी आई, क्योंकि पहले से ही यह माना जा रहा था कि सांप्रदायिक मुद्दा ही मोदी का मुख्य मुद्दा होगा और दंगों से ही मतदान की फ़सल उगाई जाएगी। यह सच साबित हुआ।

अब बहुतेरे लोग़ों का मानना है कि देश में मोदीराज के अलावा कोई विकल्प नहीं रहा। यह भी कहा जा रहा है कि अब यह राज कायम हो गया है तो लंबा चलेगा। मोदी खुद दस साल मांग रहे हैं, उन सपनों को पूरा करने के लिए जो लोग़ों को उन्होंने दिनदहाड़े दिखाए हैं। पर क्या यह संभव है?

मोदी का सबसे बड़ा समर्थक वह मध्यमवर्गीय- निम्नमध्यमवर्गीय हिंदू युवा है, जो विचारहीनता के संस्कारों में पला-बढ़ा है, जो अपने सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश के प्रति जरा भी संवेदनशील नहीं है। मुसलमानों के प्रति घृणा या कहें हिकारत का भाव उनमें कूट-कूट कर भरा हुआ है और उपभोक्ता बनने के लिए वह बेताब है, पर गांठ में जो माल है, वो कम है अथवा है ही नहीं। शिक्षित है तो रोजगार के अवसर नहीं और अर्द्धशिक्षित अथवा अशिक्षित है तो महानगरों की झुग्गी-झोपड़ियों अथवा ग्रामीण भारत के चौपालों पर बेकार बैठा ताश की बाजी सजाए है। बुनियादी जरूरतों को पूरा करने की जगह स्मार्टफोन खरीदना उसके एजेंडे में सबसे ऊपर है। इस रीढ़विहीन युवाशक्ति के बल पर कब तक राज करेगा मोदी? कहने वाले कहते हैं कि 20 साल तो जरूर करेगा।

हो सकता है। पर उनके बाद? विकास के लुभावने सपने दिखाकर युवाओं में 'हर हर मोदी' का उन्माद पैदा कर सत्ता में आने वाला मोदी अगर उनकी भोग-विलास की आकांक्षा को पूरा नहीं कर सका तो यह उन्मादी क्या चुप बैठा रहेगा? मोदीवादियों को यह उम्मीद है कि चूंकि यह युवाशक्ति रीढ़विहीन है, इसलिए यह कोई संघर्ष नहीं कर पाएगी, बल्कि कर्ज़ में डूबे किसानों की तरह हताश हो आत्मघात के मार्ग पर आगे बढ़ जाएगी और मोदी को किसी तरह की समस्या नहीं आएगी। इस बात में दम है।

मोदी का उभार और सत्ता में आना विकल्पहीनता की वजह से संभव हुआ है। जन विकल्प की शक्तियों का अभाव और जनसंघर्ष के बुनियादी रूपों का उभर नहीं पाना स्वतंत्रता के बाद भारतीय इतिहास की सबसे बड़ी विडंबना रही है। आम आदमी, मेहनतकश अवाम, किसान-मज़दूर की परवाह किसी ने नहीं की। ये हाशिए पर खड़ा रहा। वोट बैंक बनता रहा, बनाया जाता रहा। वामपंथी थैलीशाहों के आगे-पीछे डोलते रहे। कांग्रेस से लेकर समाजवादियों, दलितवादियों जिनका विगत तीन दशकों में भारतीय राजनीति में जबरदस्त प्रभाव रहा, अल्पसंख्यकवाद और जातिवाद के आधार पर वोट बैंक बनाते रहे, छद्म् धर्मनिरपेक्षतावाद चलाते रहे, तो वो मोहरा अब पिट गया है। अल्पसंख्यकवाद नहीं चलेगा, बहुसंख्यकवाद चलेगा। जाति से भी ऊपर धर्म है, राजनीतिक पंडितों को यह नहीं भूलना चाहिए। सेकुलरिज़्म पिट गया, क्योंकि यह सेकुलरिज़्म था ही नहीं। भारतीय राजनीति की बुनियाद में ही सेकुलरिज़्म नहीं था। इतिहास के पन्ने पलट कर देखें। साम्राज्यवादियों ने सांप्रदायिकता की जो विष-बेल लगाई, वो आज नव सम्राज्यवादी लुटेरों के सबसे ज्यादा काम आई। नव साम्राज्यवादी लुटेरों की सेवा में तो कांग्रेस भी लगी ही थी, पर लूट के खिलाफ़ कहीं जब आवाज़ उठती थी तो उसका बर्बर दमन कर पाने में वह हिचकती थी, जनतंत्र का लबादा पूरी तरह से उतार फेंकना नहीं चाहती थी। तभी तो केजरीवाल जैसे कुछ लोग सामने आ गए जो भ्रष्टाचार के खिलाफ़ आवाज बुलंद करने के साथ ही राजनीति में शुचिता और नैतिकता की बात करने लगे। चुनाव भी लड़ा और कांग्रेस को धूल भी चटा दी। ऐसी स्थिति में कांग्रेस अपने तथाकथित धर्मनिरपेक्ष सहयोगियों के साथ कैसे हालात पर काबू पा सकती थी। इसीलिए मोदी को लाया गया है। ये देशी-विदेशी थैलीशाहों का नवनियुक्त इंडिया मैनेजर है। ये विरोध में उठने वाली हर आवाज़ को शायद कुचल दे, यह उम्मीद इसके आकाओं को इससे अवश्य है। बहरहाल, आने वाले दिनों में भारतीय राजनीति में क्या मोड़ आते हैं, यह देखना दिलचस्प होगा, पर अभी तो मोदी है-नमो -नमो। राजीव गांधी ने एक बार कहा था कि वे पाकिस्तान को नानी याद दिला देंगे। देखना है, नमो- नमो क्या दांव चलता है।

तुर्की-ब-तुर्की

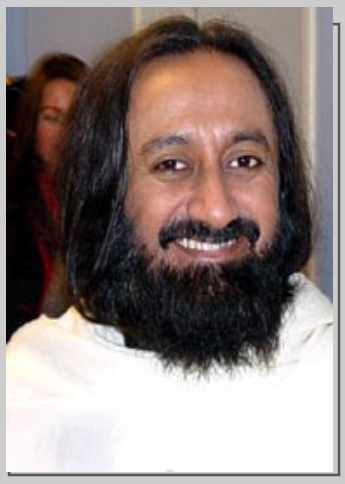

श्री श्री रविशंकर

"नरेन्द्र मोदी पर गुजरात 2002 के साम्प्रदायिक नरसंहार को लेकर लगाये गये आरोप बकवास है। मधु किश्वर को पढ़िए। उन्होंने खोजबीन करके यह सिद्ध कर दिया है कि इन तमाम वर्षो में मोदी पर बेसिर पैर के आरोप लगाये जा रहे थे।" (प्रधानमंत्री मोदी के शपथग्रहण समारोह में हिस्सा लेने के बाद की टिप्पणी)।

हमारा कहना है :

- आप जैसे आध्यात्मिक लोग जब सत्ताधारियों की परिक्रमा करते हैं तो मतलब अपनी भौतिक साधना से होता है। मोदी के निकट दिखने का यह फायदा आपको भी होगा ही।
- रविशंकर जी आपको वैसे ही कार्पोरेट और समृद्ध तबके अपना गुरू नहीं मानते! यही तबके नरेन्द्र मोदी के प्रमुख समर्थक है। स्वभाविक है कि आपका उपदेश नरेन्द्र मोदी के साथ है।
- मधु किश्वर से पहले तमाम बुद्धिजीवियों एवं जांच कमीशनों की रपटो में गुजरात नरसंहार पर विस्तृत चर्चा हुई है। बहुत सी अदालतों में मोदी के मन्त्री और सहयोगी सजा के हकदार सिद्ध हो चुके हैं। लगता है मोदी के रंग में रंगा आपका आध्यात्मिक चश्मा यह सब नहीं देख पा रहा है। देखे भी कैसे, इस चश्में को सत्ता से मिलने वाले फलों को देखने की आदत जो पड़ गयी है।
- आपने मोदी सरकार को काला धन के विरूद्ध जांच कमीशन बनाने के लिए बधाई दी है। जबकि आपका अपना आध्यात्मिक साम्राज्य काला धन वालों से होने वाली उगाही पर ही निर्भर है। अपने दिल में तो आप भी जानते हैं कि काला धन के खिलाफ मोदी सरकार की घोषणायें और कवायदें अन्ततः राजनीतिक पांखड ही साबित होगी। काला धन भी चलता रहेगा और उस पर टिका आप जैसों का आध्यात्मिक साम्राज्य भी।
- वैसे आपकी व नरेन्द्र मोदी के बीच की दोस्ती से किसी को अचंभा नहीं होना चाहिए। एक पांखडी अगर दूसरे पाखंडी की मदद नहीं करेगा तो कौन करेगा। तू मेरी पीठ खुजा, मैं तेरी।